वी.यू. के अंतर्गत राष्ट्रऋषि भारत रत्न नानाजी देशमुख की 12वीं पुण्यतिथि पर नानाजी देशमुख स्वाबलंबन की अलख जगाने वाले महान समाजसेवी विषय पर व्याख्यान माला का आयोजन।

जबलपुर। आज दिनांक 25 फरवरी 2022 को प्रो. डॉ. सीता प्रसाद तिवारी, मान. कुलपति, ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर के मार्गदर्शन एवं अभिप्रेरणा सें भारत रत्न एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख जी की 12वीं पुण्यतिथि पर नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में विराट पुरूष नानाजी देशमुख, स्वाबलबन की अलख जगाने वाले महान समाजसेवी पर व्याख्यान माला का आयोजन वि.वि. के सभागार में किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मान. डॉ. कपिल देव मिश्र, नानाजी देशमुख प्रशिक्षण एवं संस्थान अध्यक्ष एवं कुलपति, रानी दुर्गावती वि.वि., जबलपुर, सारस्वत अतिथि प्रो. प्रदीप बिसेन मान. कुलपति, जवाहर लाल नेहरू कृषि वि.वि. जबलपुर, मुख्यवक्ता प्रो. गोविंद्र प्रसाद मिश्र, पूर्व कुलपति ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर, कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सीता प्रसाद तिवारी मान. कुलपति, ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर की गरिमामयी उपस्थिति रही। मॉ सरस्वती जी के चित्र पर माल्यर्पण एवं दीप प्रज्जवलन एवं भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर व्याख्यान माला का शुभारंभ किया गया। साथ ही सभागर में सभी उपस्थित जनो का परिचय मंच से कराया गया एवं सभी अतिथियों का स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं नानाजी देशमुख प्रशिक्षण एवं संस्थान सचिव, द्वारा स्वागत भाषण देते हुये श्री आशीष मिश्रा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नानाजी देशमुख शोध संस्थान की स्थापना अगस्त 2017 में हुई तभी से प्रशिक्षण व शोध कार्य निरंतर जारी है। साथ ही जबलपुर में इस प्रकार के कार्य संपादित किये जा रहे हैं।

कार्यक्रम की श्रृंखला में सारस्वत अतिथि प्रो. प्रदीप बिसेन ने अपने उद्बोधन में कहा कि नानाजी देशमुख जी ने हमेशा सेवा से समाज का उत्थान कर ग्रामविकास एवं ग्रामोदय के लिये कार्य किया है।

कार्यक्रम की कड़ी में मुख्य वक्ता, डॉ. गोविंद प्रसाद मिश्र जी ने कहा कि राष्ट्र ऋषि जी एकात्म मानववाद के प्रेरेणा थे, साथ ही उन्होने 500 गॉवो को गोद लेकर ग्रामीण जनो को स्वाबलंबी बनाने में उनका महत्वपूर्ण योग्यदान रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. कपिल देव मिश्र जी ने विचार व्यक्त करते हुये बताया कि वे श्रंध्येय नानाजी के दंतक दलक पुत्र है, मैने अनुशासन, कार्य की परिकल्पना को उन्ही की प्रेरणा से आत्मसात किया है। साथ ही आपने बताया कि व्यक्ति में व्यक्तित्व कैसे आये यह एकात्म मानव दर्शन नानाजी में परिलक्षित होता था।

नानाजी के उद्देश्यों के परिणाम स्वरूप शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वाबलम्बन एवं गौ आधारित कृषि के 500 ग्रामों का उत्थान हुआ।

नानाजी ने 60 वर्ष उम्र में ही राजसत्ता का त्याग किया। रामराज्य अगर आना है तो वह युवा ऊर्जा के माध्यम से नानाजी के सानिध्य से ही संभव है। 94 वर्ष की उम्र में नानाजी द्वारा अधिंकाश समस्याओं का निदान किया था। नानाजी कहते थे, आप कागजों पर लिखते है, और मैं जमीन पर लिखता हूँ। वर्तमान भारत सरकार अब नानाजी के आदर्शो का अनुसरण करते हुयें ग्रामीणों की आत्म निर्भरता की दिशा में अग्रसर है। उद्गार के दौरान आपने नानाजी के संस्मरण करते कहा कि मैं अपने लिये नही, अपनो के लिये हूँ, जो शोषित और वंचित उपेक्षित है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये माननीय डॉ. सीता प्रसाद तिवारी कुलपति जी ने अपने उद्बोधन में सभागार में उपस्थित मुख्य अतिथियों एवं विशिष्ट अतिथियों के स्वागत अभिनंदन करते हुये नानाजी के जन्म एवं जीवनशैली के विषय में वर्णन किया। उन्होने नानाजी के राजनैतिक एवं सामाजिक के संबंध पर चर्चा की है। नानाजी के क्षेत्रो जैसे – शिक्षा, राजनीति, ग्रामविकास, में उनकी भूमिका एवं योग्यदान के विषय का विस्तार किया। और आदर्श गॉव की परिकल्पना का उद्देश्यों का वर्णन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय, के डॉ. एम.के. मेहता, अधिष्ठाता संकाय, कुलसचिव, डॉ. श्रीकांत जोशी, श्री अजय सिंह ठाकुर लेखानियंत्रक, डॉ. मधुस्वामी, संचालक अनुसंधान सेवाये, डॉ. सुनील नायक, संचालक विस्तार शिक्षा, डॉ. अजीत प्रताप सिंह, संचालक जैव प्रौघेगिकी, डॉ. आर.के शर्मा, अधिष्ठाता महाविद्यालय, जबलपुर, डॉ. अनिल कुमार गौर, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी, डॉ. जी.पी. लखानी, डॉ. एस.के. कारमोरे, श्री अजय सिंह ठाकुर, डॉ. गिरधारी, डॉ. एंपी.सिंह, डॉ. सुदीप्ता घोष, डॉ. विश्वजीत राय, डॉ. श्रेमंकर श्रवण, डॉ. सोना दुबे, डॉ. सुप्रदलनाथ, डॉ. आर.पी.सिंह, डॉ. सचिन जैन, डॉ. निधि राजपूत, आदि छात्र –छात्राओं की गारिमामयी उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार डॉ. आदित्य मिश्रा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण द्वारा किया गया।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)